KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/ JAN-MAR (2018)/VOL-5/ISS-1/A9 PAGE NO.30-31
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
UGC APPROVED JOURNAL NO. 47663
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

दलित कहानियों में वर्णित सामाजिक व्यवस्था: विद्रोह के स्वर

[1]डॉ॰ शकुंतला

[1]एक्सटेंशन लेक्चरर वैश्य महिला महाविद्यालय, रोहतक

सारांश

भारतीय समाज में रीति रिवाज, अंधविश्वास एवं रूढ़ियाँ जीवन के एक आवश्यक अंग के रूप में विद्यमान है, दलित समाज भी इससे अछूता नहीं है। अधिकांशतः वे हिन्दू, इस्लाम, ईसाई और बुद्धि धर्म को मानने वाले हैं। विभिन्न लोक फकीर, देवताओं के साथ–साथ रविदास, कबीर, वाल्मीकि, शिव, हनुमान, संतोषी माता, नंदा देवी, वैष्णों देवी तथा वृक्षों में पीपल तथा तुलसी आदि में उनकी आस्था है। आस्था और कर्म धर्म के दो मुख्य उपदान माने जा सकते हैं। दोनों के समन्वय से ही धार्मिक साधना सम्पन्न होती है। आस्था अपूर्ण है। देवी–देवताओं की पूजा, तीर्थ स्थलों की यात्रा और गंगा स्नान विभिन्न संसार आदि ईश्वर के प्रति आस्था और धर्म के उत्सव हैं।

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org